



खुफिया एजेंसी ने जारी की गुप्त स्पेसप्लेन की तस्वीर

वाशिंगटन

अमेरिकी रक्षा खुफिया एजेंसी (डीआईए) ने अपनी ताजा रिपोर्ट 'चैलेंजर्स टू सिक्योरिटी इन स्पेस' में चीन के एक गुप्त रीयूजेबल स्पेसप्लेन की पहली स्पष्ट सैटेलाइट तस्वीर जारी की है, जिसने वाशिंगटन के सुरक्षा रणनीतिकारों के बीच हलचल बढ़ा दी है। मैक्सार टेक्नोलॉजीज द्वारा खींची गई यह तस्वीर दर्शाती है कि चीन पृथ्वी की कक्षा में अपनी सैन्य क्षमताओं को बेहद तेजी से बढ़ा रहा है, और यह रहस्यमय स्पेसक्राफ्ट अमेरिकी स्पेस फोर्स के एक्स-37बी विमान जैसा प्रतीत होता है।

अब तक बीजिंग के इस गुप्त अंतरिक्ष कार्यक्रम की गतिविधियों को लेकर भारी गोपनीयता बरती जा रही थी, लेकिन इस खुलासे ने वैश्विक स्तर पर नई चर्चा छेड़ दी है। रिपोर्ट के मुताबिक, चीन के पास वर्तमान में 510 से ज्यादा जासूसी सैटेलाइट्स मौजूद हैं, जिनकी संख्या 2018 के मुकाबले तीन गुना बढ़ चुकी है। इस हाई-रिजोल्यूशन तस्वीर में एक छोटा, शटल जैसा स्पेसक्राफ्ट नजर आ रहा है, जिसके छोटे पंख, दो बर्टिकल टेल और बीच में एक खुला पेलोड बे दिखाई दे रहा है। इसके पिछले हिस्से के दोनों तरफ सोलर पैनल्स लगाए गए हैं।

डीआईए का कहना है कि अंतरिक्ष में रीयूजेबल गतिविधियों के लिए ऐसे स्पेसप्लेन सबसे अहम क्षमता होते हैं, क्योंकि ये कक्षा में

जाकर किसी भी वस्तु को स्थापित करने और विभिन्न परीक्षण पूरे करने के बाद सुरक्षित रूप से पृथ्वी पर वापस लौटने की काबिलियत रखते हैं। हालांकि अमेरिकी एजेंसी ने यह स्पष्ट नहीं किया है कि यह क्राफ्ट चीन के शैनलॉंग या तेंगयुन माडल्स से से कौन सा है।

अमेरिकी थिंक टैंक और रक्षा एजेंसियां इस विमान की दिशा बदलने और युद्धाभ्यास करने की क्षमता को लेकर सबसे अधिक सतर्क हैं। सामान्य सैटेलाइट्स अंतरिक्ष में तेजी से अपनी दिशा बदलने में सक्षम नहीं होते, लेकिन यह स्पेसप्लेन कक्षा में घूमते हुए खुफिया जानकारी जुटाने और अन्य स्पेसक्राफ्ट्स के करीब जाकर आपरेहन चलाने में सक्षम है।

हालांकि तस्वीरों में इसके किसी हथियार ले जाने या आक्रामक मिशन चलाने के प्रत्यक्ष

प्रमाण नहीं मिले हैं, फिर भी इसकी रणनीतिक क्षमताएं अमेरिका के लिए गंभीर चिंता का विषय बन गई हैं। चीन ने साल 2020 से अब तक अपने रीयूजेबल स्पेसप्लेन के चार ज्ञात आर्बिटल मिशन पूरे किए हैं।

इसका तीसरा मिशन 14 दिसंबर 2023 से 6 सितंबर 2024 तक चला था, जिसमें इसने अंतरिक्ष में कई छोटी वस्तुएं भी छोड़ी थीं। इसके बाद चीन ने 7 फरवरी 2026 को अपना चौथा मिशन शुरू किया था, और यह स्पेसक्राफ्ट अब भी अंतरिक्ष की कक्षा में लगातार चक्कर लगा रहा है, जिस पर अमेरिकी एजेंसियां पैनी नजर बनाए हुए हैं। अंतरिक्ष में चीन की लगातार बढ़ती सैन्य ताकत और ऐसे रहस्यमय विमानों की तैनाती ने भविष्य के सुरक्षा समीकरणों को लेकर अमेरिका की चिंताएं काफी बढ़ा दी हैं।

न्यूज़ ब्रीफ

चीन के मुलामा पाकिस्तान ने ताइवान के लिए हवाई क्षेत्र बंद किया, भारत ने ताइवान के प्रति एक सकारात्मक रुख दिखाया



कराची। पाकिस्तान ने फिर चीन के प्रति अपनी वफादारी बताकर ताइवान की एयरलाइंस के लिए अपना हवाई क्षेत्र बंद किया है। यह कदम चीन की वन चाइना पालिसी के समर्थन में उठाया गया है, जिसके कारण दुनिया भर में पाकिस्तान की आलोचना हो रही है। ठीक इसके विपरीत, भारत ने मुद्दे पर अपनी स्वतंत्र और दृढ़ नीति का प्रदर्शन कर ताइवान के प्रति एक सकारात्मक रुख अपनाया है। रिपोर्ट के अनुसार, पाकिस्तान ने ताइवान की प्रमुख विमानन कंपनियों को अपने हवाई क्षेत्र से गुजरने की अनुमति देना बंद कर दिया है, जिससे यूरोप जाने वाली उनकी उड़ानों को रास्ता बदलना पड़ा है। पाकिस्तान के रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ ने इस खबर की पुष्टि कर कहा कि देश का विमानन विभाग वन चाइना पालिसी का पालन करता है और केवल चीन की मुख्य भूमि (मैनलैंड चाइना) की एयरलाइंस को ही पाकिस्तान के ऊपर से उड़ान भरने की अनुमति देता है। बताया जा रहा है कि ताइवान की प्रमुख विमान कंपनियों ने करीब 25 अक्टूबर से ही पाकिस्तान के हवाई क्षेत्र का इस्तेमाल बंद किया था, और अब एशिया और यूरोप के बीच संचालित उनकी दर्जन भर से अधिक उड़ानें रूस के ऊपर से होकर गुजर रही हैं।

फिनलैंड में खुलेगा दुनिया का पहला परमाणु कचरा भंडार, गहराई में सालों तक सुरक्षित रहेगा रेडियोधर्मी कचरा



हेलसिंकी। फिनलैंड दुनिया का पहला ऐसा देश बनने जा रहा है, जहां इस्तेमाल हो चुके परमाणु ईंधन को स्थायी रूप से जमीन के नीचे सुरक्षित रखने की व्यवस्था की गई है। देश के ओनकालो केंद्र को हाल ही में संचालन का लाइसेंस मिलने के बाद इस परियोजना को महत्वपूर्ण सफलता मिली है। हालांकि, परमाणु कचरे के दीर्घकालिक भंडारण को लेकर सुरक्षा और पर्यावरण संबंधी चर्चातियां भी बनी हुई हैं। केंद्र को कई परीक्षाओं और तकनीकी जांच से गुजरना पड़ा, जिसके बाद संचालन की अनुमति दी गई। दुनिया के अधिकांश देशों में इस्तेमाल हो चुके परमाणु ईंधन के लिए अब तक स्थायी भंडारण की व्यवस्था नहीं है। इस आमतौर पर विशेष अस्थायी केंद्रों में रखा जाता है। फिनलैंड में ओनकालो परियोजना की शुरुआत करीब 22 साल पहले हुई थी। इस केंद्र में देश के पांच परमाणु रिएक्टरों से निकलने वाले इस्तेमाल किए गए ईंधन को सुरक्षित रखने की क्षमता होगी। इसकी कुल भंडारण क्षमता लगभग 6,500 टन यूरेनियम है। परमाणु कचरे को सुरक्षित रखने के लिए बहुस्तरीय व्यवस्था तैयार की गई है।

अब इंसानों के शव को विघटित कर जैविक खाद में किया जाएगा तब्दील, न्यू साउथ वेल्स ऐसा कानून बनाने वाला आस्ट्रेलिया का पहला राज्य बना

सिडनी। पारंपरिक अंतिम संस्कार पद्धतियों से पर्यावरण पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों को देखते हुए आस्ट्रेलिया के न्यू साउथ वेल्स राज्य ने एक क्रांतिकारी और ऐतिहासिक कानून पास किया है। इस कानून के तहत अब इंसान की मृत्यु के बाद उसके शरीर को जलाने या मिट्टी में दफनाने के बजाय प्राकृतिक रूप से विघटित करके पोषक तत्वों से भरपूर जैविक खाद में तब्दील किया जा सकेगा। इस प्रक्रिया को वैज्ञानिक और तकनीकी भाषा में ह्यूमन कंपोस्टिंग या टेरामेशन या नेचुरल ऑर्गेनिक रिडक्शन कहा जाता है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक न्यू साउथ वेल्स ऐसा कानून बनाने वाला आस्ट्रेलिया का पहला राज्य बन गया है। हालांकि, इसके लिए जरूरी बुनियादी ढांचे, वैज्ञानिक दिशा-निर्देशों और विशेष सुविधाओं को विकसित करने में समय लगेगा और उम्मीद है कि यह सेवा 2029 तक आम जनता के लिए उपलब्ध हो जाएगी। ह्यूमन कंपोस्टिंग की पूरी प्रक्रिया अत्यंत वैज्ञानिक और नियंत्रित परिस्थितियों में पूरी की जाती है। सबसे पहले मृत शरीर को किसी प्राकृतिक और बायोडिग्रेडेबल कपड़े में लपेटा जाता है। इसके बाद शव को एक विशेष रूप से डिजाइन किए गए बेलनाकार स्टील के पात्र में रखा जाता है। इस पात्र के अंदर लकड़ी के बुरादे, सूखे भूसे, छाल और अल्काला जैसी जैविक सामग्रियों की एक मोटी परत बिछाई जाती है। ये सामग्रियां पात्र के अंदर सही मात्रा में नमी, कार्बन और नाइट्रोजन का संतुलन बनाए रखने में मदद करती हैं। इसके बाद पात्र को सील कर दिया जाता है और अंदर का तापमान प्राकृतिक रूप से सुक्ष्मजीवों की गतिविधियों के कारण 55 से 70 डिग्री सेंटीग्रेड तक बढ़ाया जाता है। यह उच्च तापमान शरीर के ऊतकों को तेजी से गलाने के साथ-साथ सभी प्रकार के हानिकारक कीटाणुओं, वायरस और बीमारियों को नष्ट कर देता है। रिपोर्ट के मुताबिक दो से तीन महीने के अंदर संपूर्ण मांसव शरीर, जिसमें मांसपेशियां और अंग शामिल हैं।

घर में इस्तेमाल होने वाली आम चीजें भी हो सकती है सेहत की दुश्मन

जिनेवा
क्या आप जानते हैं कि आपके घर में इस्तेमाल होने वाली आम चीजें भी सेहत के लिए गंभीर खतरा पैदा कर सकती हैं? दीवारों का पुराना पेंट, बच्चों के खिलौने, कार्सेटिवस, गहने और यहां तक कि कुछ बर्तन भी सीसा नामक जहरीली धातु के संपर्क में आने का कारण बन सकते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) भी लंबे समय से सीसे के संपर्क से होने वाले नुकसान को लेकर चिंता जता चुका है। इसका खतरा इसलिए भी अधिक है क्योंकि कई बार इसके संपर्क में आने पर तुरंत कोई लक्षण दिखाई नहीं देते, जिससे इस अदृश्य दुश्मन को पहचानना और उससे बचना मुश्किल हो जाता है।

सीसा एक अत्यंत जहरीली धातु है, जिसका उपयोग पहले कई प्रकार के उत्पादों में बड़े पैमाने पर किया जाता था। हालांकि अब इसके उपयोग पर कई प्रतिबंध लग गए हैं, लेकिन आज भी कुछ उत्पादों और हमारे पर्यावरण में इसके मौजूद होने का खतरा बना हुआ है। पुराने पेंट से निकलने वाली धूल, दूषित मिट्टी और पानी इसके प्रमुख संभावित स्रोत हो सकते हैं। इसके अलावा, कुछ सिरैमिक बर्तन, बच्चों के खिलौने, सस्ते या नकली गहने और कुछ कार्सेटिक्स



भी सीसे के संपर्क में आने की वजह बन सकते हैं। चिंताजनक बात यह है कि कुछ मसालों और पारंपरिक दवाओं में भी मिलाबट या संदूषण के कारण सीसा पाया जा सकता है, जो अनजाने में ही हमारे शरीर में पहुंच सकता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, सीसे का संपर्क दुनिया भर में स्वास्थ्य के लिए एक गंभीर खतरा है, जिससे हर साल लाखों लोगों की सेहत प्रभावित होती है। सीसे का संपर्क हर उम्र के व्यक्ति को नुकसान पहुंचा सकता है, लेकिन छोटे बच्चों के लिए यह विशेष रूप से खतरनाक है। इस उम्र में उनका दिमाग और तंत्रिका तंत्र तेजी से विकसित हो रहा होता है, और सीसे के संपर्क से उनकी सीखने की क्षमता, मानसिक विकास और व्यवहार पर बहुत बुरा असर पड़ सकता है। यह बच्चों में बौद्धिक अक्षमता का कारण बन सकता

है और यहां तक कि कम मात्रा में लंबे समय तक संपर्क भी उनके लिए बेहद नुकसानदेह साबित हो सकता है। छोटे बच्चे अक्सर जमीन पर खेलते हैं और हर चीज को छूने के बाद अपने हाथ मुंह में डाल लेते हैं। यदि उनके हाथों पर सीसे से दूषित धूल या मिट्टी लगी हो, तो यह आसानी से उनके शरीर में पहुंच सकती है। इतना ही नहीं, गर्भावस्था के दौरान सीसे का संपर्क गर्भवती महिला और गर्भस्थ शिशु दोनों के लिए भी बेहद हानिकारक हो सकता है, जिससे जन्म के समय बच्चे का वजन कम होने या समय से पहले जन्म का खतरा बढ़ जाता है। यह खतरा केवल बच्चों तक ही सीमित नहीं है। लंबे समय तक सीसे के संपर्क में रहने से वयस्कों में गुर्दे (किडनी) और दिल से संबंधित समस्याओं का जोखिम बढ़ सकता है, साथ ही यह उच्च रक्तचाप और प्रजनन क्षमता को भी प्रभावित कर

सकता है। सीसा शरीर के लगभग सभी अंगों को प्रभावित करने की क्षमता रखता है, जिसमें तंत्रिका तंत्र, पाचन तंत्र और रक्त निर्माण प्रणाली भी शामिल है। इस गंभीर खतरे से बचाव के लिए हमें कुछ महत्वपूर्ण कदम उठाने होंगे। सबसे पहले, अपने घर में नियमित रूप से सफाई करें और धूल हटाने के लिए सूखे कपड़े के बजाय हमेशा गीले कपड़े या पोछे का इस्तेमाल करें, ताकि सीसे युक्त धूल हवा में न फैले। अगर आपके घर में पुराना पेंट है, तो उसे खुद खुरचने से बचें, क्योंकि इससे दूषित धूल बड़े पैमाने पर फैल सकती है; इसके लिए पेशेवर मदद लें। बच्चों को टूटे हुए या ऐसे खिलौनों से दूर रखें जो सुरक्षा मानकों पर खरे न उतरते हों। यदि आपको अपने पीने के पानी के दूषित होने की आशंका हो, तो उसकी जांच अवश्य करवाएं।

कार्बन डाइआक्साइड की वृद्धि से गहराया वैश्विक जलवायु संकट



वाशिंगटन। पृथ्वी के वायुमंडल में कार्बन डाइआक्साइड गैस के बढ़ने की रफ्तार 1960 के दशक की तुलना में अब तीन गुना तेज हो चुकी है। विश्व मौसम विज्ञान संगठन की एक वैश्विक रिपोर्ट के अनुसार, वर्ष 2025 में कार्बन डाइआक्साइड, मीथेन और नाइट्रस आक्साइड जैसी प्रमुख ग्रीनहाउस गैसों की सांद्रता अब तक के सर्वोच्च रिकार्ड स्तर पर पहुंच गई है। सबसे चिंताजनक बात यह है कि मानव जनित गतिविधियों से उत्पन्न इन जहरीली गैसों का प्रतिकूल प्रभाव किसी एक या दो साल तक नहीं, बल्कि आने वाली कई सदियों तक वायुमंडल में बना रह सकता है। आंकड़ों के अनुसार, वर्ष 2025 में वायुमंडल में कार्बन डाइआक्साइड की सघनता 426.8 पार्ट्स प्रति मिलियन (पीपीएम) दर्ज की गई, जबकि मीथेन और नाइट्रस आक्साइड की मात्रा भी अपने रिकार्ड स्तर पर रही। पिछले 11 वर्षों की अवधि को पृथ्वी के इतिहास में अब तक का सबसे गर्म काल माना गया है और आगे भी तापमान बढ़ने का यह सिलसिला जारी रहने की आशंका व्यवक्त की गई है। ग्रीनहाउस गैसों की इस बेतहाशा वृद्धि के कारण वैश्विक तापमान में निरंतर बढ़ोतरी हो रही है, जिससे भीषण सूखा, विनाशकारी बाढ़, समुद्री तूफान और प्रचंड गर्मी जैसी प्राकृतिक आपदाओं का खतरा कई गुना बढ़ गया है।

जापान का अनोखा द्वीप मियाके-जिमा: जहां गले में गैस मास्क लेकर चलते हैं लोग, सायरन बजते ही थम जाती है जिंदगी

टोक्यो
दुनिया में कई ऐसी जगहें हैं, जहां प्राकृतिक खूबसूरती के साथ खतरनाक परिस्थितियां भी मौजूद हैं। जापान का मियाके-जिमा द्वीप इसका अनोखा उदाहरण है। प्रशांत महासागर में स्थित द्वीप पर रहने वाले लोग अपने साथ मोबाइल, चाबी और बटुए की तरह गैस मास्क रखते हैं। यहां ज्वालामुखी से निकलने वाली जहरीली गैस के खतरे के कारण लोगों को हर समय सतर्क रहना होता है। सायरन बजते ही लोग मास्क पहनने और सुरक्षित स्थान पर जाने की तैयारी करते हैं।



टोक्यो से करीब 180 किलोमीटर दक्षिण में मौजूद मियाके-जिमा दूर से बेहद खूबसूरत दिखाई देता है। हरी पहाड़ियों और नीले समुद्र से

घिरे द्वीप के बीच माउंट ओयामा नाम का सक्रिय ज्वालामुखी है। इससे निकलने वाली सल्फर डाइआक्साइड गैस लोगों के लिए गंभीर खतरा

बनी रहती है। इस गैस की अधिक सांद्रता आंखों और श्वसन तंत्र में जलन पैदा कर सकती है तथा सांस लेने में परेशानी बढ़ा सकती है। वर्ष 2000 में माउंट ओयामा में कई बड़े विस्फोट हुए, जिसके बाद जहरीली गैस का उत्सर्जन काफी बढ़ गया। स्थिति गंभीर होने पर सितंबर 2000 में द्वीप के करीब 3,600 निवासियों को वहां से हटाकर सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया गया। कई वर्षों तक लोगों को अपने घरों से दूर रहना पड़ा। बाद में गैस उत्सर्जन की स्थिति का आकलन करने के बाद निवासियों को चरणबद्ध तरीके से लौटने की अनुमति दी गई। द्वीप पर वापस के बाद भी खतरा पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ। यहां हवा में सल्फर डाइआक्साइड की मात्रा पर नजर रखने के लिए निगरानी व्यवस्था विकसित की गई। गैस का स्तर बढ़ने पर चेतावनी जारी की जाती है, ताकि लोग आवश्यक सुरक्षा उपाय अपना सकें। गैस मास्क और सुरक्षित स्थानों की उपलब्धता यहां की जीवनशैली का अहम

हिस्सा बन गई है। मियाके-जिमा में बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक को गैस से बचाव के उपायों की जानकारी दी जाती है। स्कूलों और सार्वजनिक स्थानों पर आपात स्थिति से निपटने की तैयारी पर जोर दिया जाता है। घरों और इमारतों में वायु की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए विशेष व्यवस्थाएं भी की जाती हैं। इस द्वीप की अनोखी परिस्थितियां वैज्ञानिकों, भूवैज्ञानिकों और रोमांच पसंद पर्यटकों को आकर्षित करती हैं। हालांकि, यहां की यात्रा से पहले स्थानीय प्रशासन की सुरक्षा संबंधी सलाह और मौजूदा चेतावनियों की जानकारी लेना जरूरी है। मियाके-जिमा की कहानी बताती है कि प्राकृतिक आपदाओं के बीच जीवन को सुरक्षित बनाए रखने के लिए सतर्कता, वैज्ञानिक निगरानी और अनुशासन कितने महत्वपूर्ण हैं। यहां गले में लटका गैस मास्क केवल एक उपकरण नहीं, बल्कि प्रकृति के खतरे के बीच सामान्य जीवन बनाए रखने की जरूरत का प्रतीक है।

अमरीकी केंद्रीय बैंक फेडरल रिजर्व ने अपनी तय ब्याज दर बरकरार रखी

ट्रम्प ने भी पिछले महीने प्रमुख ब्याज दर बढ़ाने के लिए फेड की आलोचना की थी

वाशिंगटन

अमरीकी केंद्रीय बैंक फेडरल रिजर्व ने अपनी तय ब्याज दर को 3.75 फीसदी से 4 फीसदी की लक्ष्य सीमा पर अपरिवर्तित रखा है। इससे उच्च मुद्रास्फीति के बावजूद औसत प्रभावी दर करीब 3 दशमलव 0-9 फीसदी पर बनी हुई है। केंद्रीय बैंक ने अपनी दो दिवसीय नीतिगत बैठक के बाद एक बयान जारी किया है। इसके मुताबिक मुद्रास्फीति उच्च बनी हुई है और ब्याज दरों में वृद्धि न होने से ज्यादा जानकारी एकत्रित करने का अवसर मिलेगा। इससे यह तय करने में भी मदद मिलेगी कि मुद्रास्फीति को केंद्रीय बैंक के 2 फीसदी के लक्ष्य तक वापस लाने के लिए कौन सी नीति अपनानी चाहिए।

यह फैसला मध्यावधि चुनाव से ठीक छह दिन पहले आया है। इसमें जीवन यापन की लागत और वहनीयता से संबंधित चिंताओं पर विशेष ध्यान दिया गया है। केंद्रीय बैंक के अधिकारियों ने कल के फैसले से असहमति जताई है। इसके लिए फेड गवर्नर लिसा कुक और फेडरल रिजर्व बैंक आफ क्लीवलैंड की अध्यक्ष बेथ हैमक ने ब्याज दरों में एक चौथाई अंक की वृद्धि के पक्ष में मतदान किया था।



रिपोर्ट के मुताबिक पेट्रोल, किराने का सामान और कपड़े जैसी अन्य वस्तुओं की कीमतें बढ़ने के कारण उपभोक्ताओं का आम तौर पर अर्थव्यवस्था से मोहभंग हो गया है। फिर भी वार्श की मुद्रास्फीति की लक्ष्य स्तर पर लाने में कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। अर्थव्यवस्था के अन्य हिस्से पहले से ही उच्च ब्याज दरों से प्रभावित हो रहे हैं। उपभोक्ता मूल्य एक साल पहले की तुलना में 3 दशमलव 0-7 फीसदी बढ़ने से सितंबर में मुद्रास्फीति में तेजी आई। यह वृद्धि फरवरी में ईरान युद्ध से ठीक पहले की 2 दशमलव 0-4 फीसदी की दर से कहीं ज्यादा थी।

चेयरमैन केविन वार्श के नेतृत्व में फेड ने पिछले महीने तीन साल में पहली बार अपनी बेंचमार्क दर बढ़ाई। इस फैसले में राष्ट्रपति ट्रम्प की ब्याज दरों में कटौती की मांगों को नजरअंदाज किया गया। ट्रम्प ने भी पिछले महीने प्रमुख ब्याज दर बढ़ाने के लिए फेड की आलोचना की है। उन्होंने इसके लिए वार्श के बजाय केंद्रीय बैंक की दर-निर्धारण समिति को जिम्मेदार ठहराया। कई अर्थशास्त्री का तर्क है कि मजबूत विकास इस बात का प्रमाण है कि ब्याज दरें विशेष रूप से अधिक नहीं हैं और अर्थव्यवस्था मुद्रास्फीति से निपटने के लिए उच्च दरों का सामना कर सकती है।